वक्त आया हैं कैसा भाइ
हम जानत हैं पर जानत नाही
कोलाहल ने मुरली छुपाइ
ध्यान देत बात समझ में आइ

ये जो सारी ग्यान की  कृतीया
अब लगती है अपनी ही समृतिया
समझ ने थी समझ को छुपाई
ध्यान देत बात समझ में आइ

समझा था अपने को घ्यानी
किसी की भी थी बात न मानी
घ्यान करत कभी होत ही नाही
ध्यान देत बात समझ में आइ

अन्दर है वो सब है जानता
मनवा कुछ और ही मानता
स्थीर होत ही मस्ती छाइ
ध्यान देत बात समझ में आइ

मस्ती मैं अलमस्त दिवाना
गाता है अपना ही तराना
हजम होवि न अमरूत की मिठाइ
ध्यान देत बात समझ में आइ

अन्दर पी कर बाहर हो जाती
कही लगा कर फिर अपने को बचाती
देखत हि व्रिती शाम जाइ
ध्यान देत बात समझ में आइ

नाजुक इस अन्तर के खेल मै
अन्धेर हो बादल के घेर मै
कभी सुंय भी देगा स्पश्ट दिखाइ
ध्यान देत बात समझ में आइ

ध्यान करने की क्रीया है नाही
देखने मै सब समझ समाइ
साक्शीभाव ने ज्योत जगाइ
ध्यान देत बात समझ में आइ

तुज क्रिपा से ही तुम प्रगट होइ
साधन लाख करे भले कोइ

तोहरी किपा है अखुट अनन्ता
पचावत जल्दी साधनवन्ता

वरणन तो प्रभु किया है तगडा
तुम जानत मम अन्तर का झगडा
सब भावो की है खिचडी पकाइ
तुम ही उगारो ओ मोरे साइ